Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

ॐ

|| Whole World is a Family ||

दि. 30-1-2014
"गुरुवार"

सदगुरु वाणी -(3)

सभी पुण्य आत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

इस गहनध्यान अनुष्ठान मे प्रत्यक्ष "गुरुशक्तीया" ही गुरुकार्य का निरीक्षण कर रही है। और उनका निरीक्षण अती सुक्ष्मरूप से ही होता है। और वह जो बतायी वही मेरे से आपको सुचित किया जाता है, यह एक बार पढने से आप के समझ मे नही आयेगा कम से कम दसबार पढीये।

मनुष्य की बुद्धी स्थुल को ही महत्व देती है। सुक्ष्म को नही इसी लीये मनुष्य शरीर को अधीक महत्व देता है। "आत्मा" को नही शरीर से किये गये कर्म वह पुण्यकर्म, हो या पाप कर्म, शरीर के ही "मैं" के अंहकार को ही वृद्धीगत करते है। पुण्यकर्म, के कारण मनुष्य "सदगुरु" तक पहुच भी जाता है, लेकीन "सदगुरु" को जान नही पाता है, और "मान" नही पाता है, यही कारण है, की "सदगुरु" तक पहुचने वालो की संख्या बहुत अधीक होती है। "सदगुरु" को "मानने" वालो की कम।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

पुर्वजन्म के पुण्यकर्म के कारण "सदगुरु" तक पहुचा जा सकता है, लेकीन पाया नही जा सकता है, और "सदगुरु" तक पहुचोगे तो "आत्मा की अनुभुती" भी प्राप्त हो जायेगी। लेकीन "अनुभुती" पा कर भी क्या पाया है, यह जान नही पाओगे, क्योकी "अनुभुती" का संम्बन्ध है, "आत्मा" से और आप तो "कर्म और शरीर" का ही केवल ज्ञान रखते हो, पुण्यकर्म को ही समझने वाला शरीर, आत्मा के "अनुभुती" के "महत्व" को क्या समझेगा, जो शरीर सदगुरु को ही नही जान पाया वह सदगुरु से प्राप्त "अनुभुती" को क्या समझेगा "सदगुरु" तो स्थुल रुप मे जिवंन्त है, जब उसे ही नही जान पाये तो उसके द्वारा की गयी "अनुभुती" को क्या समझ पायेगे यही एक कारण है, की "सदगुरु" को पा कर भी साधक सदगुरु को "खो" देते है, अनुभुती को पा कर भी साधक "अनुभुती" को "खो" देते है, और मैने सदगुरु को पा लीया का "अंहकार" भी प्राप्त कर लेते है, मैने "आत्मअनुभुती" भी प्राप्त कर ली यह भी "अंहकार" बढा लेते है, सब "अंहकार" की वृद्धी है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

"मैं" के अंहकार का अपना अलग, ही हिसाब का खाता है, आप उसमे "पुण्यकर्म" करके वृद्धी करते हो, आप उसमे "सदगुरु" को पाकर भी वृद्धी करते हो, आप सदगुरु से "आत्म अनुभुती" पा कर भी वृद्धी ही करते रहते हो, । "मैं" प्रतीनीधी है, शरीर का "मैं" के साथ किया गया पुण्यकर्म "मैं" के साथ पाया गया। "सदगुरु" "मैं" के साथ पायो गयो "आत्म अनुभुती" आप के कुछ भी कामकी नही है। सब बेकार है। क्योकी मैंने सदगुरु को पा लिया। मैंने "अनुभुती" को पा लीया। यह भ्रम निर्माण कर देगी। और जिवन मे कभी भी इस ओर कदम नही बढाओगे अब "शकांन्त मे बैठ कर" चिन्तन" करो "मनन" करो क्या मै सदगुरु को जानपाया क्या,? क्या मै अनुभुती को समझ पाया क्या। चिन्तन मनन आपको भितर की ओर ले जायेगा। और "अंहकार" का प्रक्षालन आपको बाहर की ओर ले जायेगा। आपको कहाँ जाना है, पहले यह तय करो।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

गुरुशक्तीया अपनी बात एक कहानी के माध्यम से ही कहना चाहती है। एक था शामु जो बैंक मे अधीकारी के रूप मे कार्यरत था उसने अपने पुर्वजन्म मे अच्छे पुण्यवान कर्म किये थे उन्ही कर्मों को वह इस जन्म मे भोग रहा था और अपने इस जिवन मे वह सुखी था। उसके आसपास के मित्र वैष्णोदेवी के दर्शन करके आये, तो उनको देख उसे भी प्रेरणा मिली की वह भी वैष्णोदेवी के दर्शन कर के आये। और उसने अगले वर्ष थोडा धन इकट्ठा कीया और वैष्णवदेवी के दर्शन करने चला गया, उसके मन मे न उस स्थान के प्रति कोई आस्था थी और न "श्रद्धा" थी। सब जाकर आये इस लीये यह भी वहा जाकर सब जाने को चला था वह वहाँ गया भी और दर्शन किये और लोग दर्शन कर रहे थे इस शामु ने भी दर्शन किये और वापस अपने घर आ गया और घर पर आकर अपने मित्रो से कहने लग गया मैने, भी वैष्णोदेवी के दर्शन किये "मै" भी वहा जाकर आया याने वहाँ जाकर आके शामु ने अपने "अंहकार" मे वृद्धी करली की मैने भी दर्शन किये "मै" भी वह यात्रा कर के आ गया। लेकीन वहाँ जाकर जो प्राप्त होना चहीये वह उसे नही मिला क्योंकी इसका ध्यान उसे नही था, यह शरीर और पुण्यकर्मो की यात्रा थी।

एक रामु था जो चाय बागान मे एक मजदुर था उसने भी जाना वैष्णोदेवी के बारे मे जाना तभी से वह उसका भक्त बन गया था। वह सतत वैष्णोदेवी का चिन्तन करता था, वह जानता था वैष्णोदेवी "ध्यान" है, जहाँ जाकर मनुष्य की सभी मनोकामना पुर्ण हो जाती है, उस ध्यान के चैतन्य को वह जानता था। और यह भी जानता था, वहाँ जाकर उसे क्या "मांगना" है, और यह भी जानता था की वहा जाने के लिये जो धन चाहीये वह उसके पास कभी भी नही होगा।

इसी लीये उसने रोज वैष्णोदेवी की पुजा करना प्रारंभ किया और पुजा करते² वह वैष्णोदेवी से इतना एकरूप हो गया की ध्यान मे उसे वैष्णोदेवी ने "दर्शन" दिये। और फीर एक चमत्कार हुआ उसके मालीक की बुढ़ी माँ को दर्शन करने की इच्छा हुयी तो अकेली बुढ़ी माँ को वैष्णोदेवी कैसे भेजे इसलीये रामु के मालीक ने रामु को भी उसी बुढी माँ के साथ वैष्णोदेवी दर्शन करने को रवाना किया। और दोनो ही इस यात्रा पर चल दिये आज रामु बहुत प्रसन्न था क्योकी उसके जिवन की यह सबसे बड़ी इच्छा पुर्ण होने वाली थी, उसकी सपुर्ण जिवन की आस पुर्ण होने वाली थी।

रामु अपनी मालीक की बुढ़ी माँ के साथ वैष्णोदेवी के स्थान तक पहुचा वहा जाकर उसे एक निर्वीचारीता की स्थिती प्राप्त हो गयी और उसने वहाँ जाकर वैष्णोदेवी को "प्रार्थना" की मुझे इसी जन्म मे "मोक्ष" का मार्ग बता वहा का महत्व क्या है, वह जानता था वहा क्या मांगना चाहिये वह जानता था और इसी लीये वहा उसने अपने आत्मा की उन्नती का मार्ग मांगा, बाद मे दोनो ही वापस आये और फीर रामु के जिवन उसी के चायबागान मे एक परमात्मा का माध्यम "सदगुरु" के रुप मे आया - और उस सदगुरु से "आत्मअनुभुती" को प्राप्त कर रामु अपने इसी जिवन मे "मोक्ष" की स्थिती को प्राप्त हुआ यह एक सत्य घटना मेरे सामने घटी हुयी है।

इस घटना से हम यह समझ सकते है, की अगर हम पुण्यकर्म अपनी आत्मा की उन्नती के लिये करते है, तो वह आत्मा की "शुद्धता" को बढाते है, और वही पुण्यकर्म हम प्रदर्शन के लिये करते है, तो वह शरीर का "मैं" का अंहकार बढाते है, और मैं का अंहकार का संमन्ध शरीर के साथ होता है, इसी लिये इस मैं के अंहकार के साथ कीये गये पुण्यकर्म के कारण हम अगले जन्म मे "सदगुरु"

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

तक पहुंच भी जाते है। और अनुभुती भी प्राप्त कर लेते है, लेकीन हम सदगुरु को समर्पीत नही हो पाते और इसी कारण हम वहाँ भी अपना "मै" अलग बना कर रखते ही है।
जिस प्रकार से किसी पवीत्र स्थान पर जाने के पुर्व हम अपने आप को पवीत्र करते है, शुद्ध करते है, उस स्थान की उर्जा के जुडने के लीये अपने आप को संतुलीत करते है। ठिक ऐसा ही है, कीसी सदगुरु के पास भी जाने के पुर्व हमे अपने आप को इतना शुद्ध और पवीत्र बनाना चाहिये जिससे हम चित्त के माध्यम से सदगुरु से "समरस" हो सके और उसके गंगा की पानी की सामुहीकता मे अपने "मै" के अंहकार की "काली शाई" विसर्जीत कर सके "काली शाई" कभी भी "सफेद" नही हो सकती है, वह केवल "विसर्जीत" ही की जा सकती है, यह अगर आप को आपके जिवन मे करते आया तो "एक क्षण" भी दिशा बदल सकता है। और आत्मा की पवीत्रता और शुद्धता केवल साधना से ही आ सकती है। इसी लीये सतत साधना करे की मै एक पवीत्र आत्मा हु मै एक शुद्ध आत्मा हु। तब कही आप के भितर आत्मा का प्रकाश होगा और उस आत्म प्रकाश मे आपको सब स्पष्ट स्पष्ट दिखायी देने लग जायेगा।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

गुरु माँ "मुझे समझाती है, की टिचर कीतना की पढ़ालीखा हो सामने बैठा विद्यार्थी तो पहली ही कक्षा मे होता है, अब मैने एम.ए., कीया तो मेरा सारा ज्ञान तो उस विद्यार्थी मे मै उतलना भी चाहु तो नही डाल सकती क्योकी वह ज्ञान पाने के लीये मुझे 18 साल लगे है, वह ज्ञान पाने के लीये उस मेरे विद्यार्थी को भी 18 साल तो लगेगे ही। वैसा ही है, आपने जो कई जन्मो की साधना से जो प्राप्त किया है, वह आप साधको मे एक ही जन्म मे उतलना चाहते है, तो वह कैसे संभव होगा उन्हे भी कई जन्मो तक इंतजार करना होगा।

मैने कहा था, की मै मेरे साधको की "माँ" हु जो कष्ट जो तकलीफे मैंने मेरे जिवन मे उठायी है, वह मेरे बच्चो को न उठाना पडे यह मेरे प्रयत्न है, और व्यवहारीक शिक्षा मे तु कहती है, वह सही है, लेकीन आध्यात्मीक शिक्षा मे सद्‌गुरु का "समुचा ज्ञान संक्रमण" मे ही शिष्य को प्राप्त हो सकता है, यह मेरा निजी अनुभव है। क्योकी बाद मे शिष्य का शरीर अलग हो, आकार अलग हो, रंग अलग हो लींग, अलग हो जाती, अलग हो देश, अलग हो धर्म, अलग हो लेकीन यह,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W).
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

सब तो बाहरी है, शरीर का है, नाशवान है, यह अलग हो सकता है। लेकीन शिष्य की "आत्मा" साकरूप हो जाती है, यह घटना ठीक वैसी ही है, जैसे कीसी "विशाल समुद्र" मे जाकर कोई नदी मिल जाती है, एक क्षण मे नदी "समुद्र" बन जाती है, "समुद्र" कहलाती है। नदी का अपना कोई अस्तीत्व ही नही रह पाता है, क्योकी यह एक "नैसर्गिक" घटना है, ठीक इसी प्रकार "सद्गुरु" के द्वारा शिष्य को "अनुभुती" भी एक "नैसर्गीक" घटना है, इस संसार मे न कोई मनुष्य आत्मा की अनुभुती करा सकता है, और न कोई मनुष्य इसे ग्रहण कर सकता है,

बस यह अनुभुती को पा कर भी क्या रहता है, साधक का शरीर और शरीर का "मैं" का अंहकार जो अनुभुती को पाकर भी आत्मा को परमात्मा मे विलीन होने नही देता है। अब इस अपने "मैं" पर तो साधक को ही नियंत्रण करना होगा। यह "मैं" का अंहकार ही आत्मा के मोक्ष प्राप्ती के मार्ग की सबसे बडी बाधा है।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

आत्मा की अनुभुती ही "मोक्ष" का व्दार है, लेकीन अपने शरीर के साथ व्दार से प्रवेश नही हो सकता है, शरीर पर नियंत्रण है, "मै" के अंहकार का वह शरीर को पकडता है, और शरीर आत्मा को इसी लीये एक ही मार्ग है, अपनी आत्मा को सशक्त करो तभी शरीर के अंहकार पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

पुण्य कर्म से "सदगुरु" तक पहुचा जा सकता है, "सदगुरु" को पाया नही जा सकता है, परमात्मा की प्राप्ती के लिये आत्मा की पवीत्रता और शुध्दता अत्यन्त आवश्यक है। वह केवल साधना से ही संभव है, नियमीत साधना करे अपनी आत्मा को जाने उसके साथ कुछ समय बीताये कल वही आपकी "गुरु" बन जायेगी फीर जानोगे बाहर का गुरु और भित्तर का गुरु अलग नही है, एक ही है, आप सभी उस स्थिती तक पहुचे यही प्रभु से प्रार्थना है, आप सभी को ढेरो ढेरो आशीर्वाद ---

आपकी माँ
बाबेश्वरी
30/1/2014
गुरुवार